Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 2, Issue - 6, Nov-Dec – 2019
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 1.847
Received on : 09/11/2019 Accepted on : 22/11/2019 Publication Date: 30/12/2019

पर्यावरण शिक्षा में मीडिया एवं तकनीकी का उपयोग

जैनेन्द्र सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर (शिक्षाशास्त्र)
कॅरियर कालेज आफ मैनेजमेण्ट एण्ड एजुकेशन, लखनऊ
ईमेल – singhjainendra198@gmail.com

शोध सारांश : जीवन को निर्मित करने में पर्यावरण अह्म भूमिका निभाता है। यह मानव जीवन को आधार प्रदान करता है। पर्यावरण के तत्वों की विद्यमानता से पृथ्वी पर जीवन संभव हुआ है। मानव के चारों का वह क्षेत्र जो उसे घेरे रहता है, उसके जीवन तथा क्रियाओं को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है, पर्यावरण कहलाता है। आधुनिक युग में पर्यावरण के बढ़ते महत्व को जानने हेतु पर्यावरण शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में स्पष्ट किया जा सकता है। पर्यावरण ि"ाक्षा को व्यापक एवं प्रभावी बनाने हेतु मीडिया एवं तकनीकी का उपयोग किया जाता है। मीडिया के अर्न्तगत टेलीविजन, रेडियो, सिनेमा, समाचार पत्र, पत्रिकाएं आदि आते है एवं तकनीकी के द्वारा पर्यावरण शिक्षा को रोचक, अत्यधिक सक्रिय, जिज्ञासु और अच्छे तरीके से दिया जा सकता है। इस अध्याय का उद्देश्य पर्यावरण शिक्षा में मीडिया एवं तकनीकी के उपयोग को जानना है।

मुख्य शब्द : पर्यावरण शिक्षा, मीडिया, तकनीकी।

प्रस्तावना:

पर्यावरण चेतना, अभियान, जागरूकता कार्यक्रमों, परिस्थितिकी संतुलन, प्राकृतिक संसाधनों के दोहन, प्राकृतिक आपदाओं के कारणों, पर्यावरण प्रदूषण के कारण, पर्यावरण संरक्षण सम्बन्धी कानूनों, पर्यावरण शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर पाठ्यक्रमों, शिक्षण पद्वतियों, सहायक सामग्री आदि की जानकारी मीडिया एवं तकनीकी के माध्यम से ही दी जा सकती है। आज पर्यावरण की स्थिति दयनीय होती जा रही है। जिसके लिए प्रत्येक नागरिक को पर्यावरण के प्रति जागरूक होने की आवश्यकता है। जिसके द्वारा ही पर्यावरण मे उन्नति हो सकती है। दोनो ही माध्यम पर्यवरणीय जागरूकता का प्रसार करने के लिए सशक्त माध्यम की भूमिका निभा सकते है। इस प्रकार मीडिया एवं तकनीकी का उपयोग करके लोगों को पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूक बनाया जा सकता है। अतः पर्यावरण शिक्षा में मीडिया एवं तकनीकी की महती भूमिका है।

पर्यावरण की संकल्पना:

पर्यावरण शिक्षा का अभिप्राय मनुष्य में उसके प्राकृतिक तथा भौतिक वातावरण के प्रति चेतना जाग्रत करने की शिक्षा है। पर्यावरण शिक्षा जहॉ एक ओर मनुष्य को अपना भौतिक विकास करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का समुचित प्रयोग करने की शिक्षा देती है वहीं दूसरी ओर पर्यावरण घटकों एवं वस्तुओं के संरक्षण का भी बोध कराती है। पर्यावरण शिक्षा प्राकृतिक सम्पदाओं का विवेकपूर्ण, आवश्यकतानुसार लम्बी अवधि तक उपयोग करने तथा भावी पीढी के लिए भी उन्हें सुरक्षित रखने का ज्ञान देने वाली शिक्षा है। पर्यावरण शिक्षा, पर्यावरण और विकास गति की साम्यावस्था का बोध कराने वाली शिक्षा है। इस प्रक्रिया में पर्यावरण और मानव के पारस्परिक सम्बन्धों तथा पर्यावरण के उपयोग, संरक्षण व संवर्धन की शिक्षा दी जाती है।

मीडिया की संकल्पना:

वर्तमान समय में मीडिया का जीवन के सभी क्षेत्रों में प्रभाव दिखाई दे रहा है। अतः पर्यावरण शिक्षा पर भी इसका प्रभाव निश्चित रूप से पड़ा है। दूसरे शब्दों में मीडिया ही एक ऐसी संस्था है जिसने हमारे रहन–सहन और तौर तरीके, विचारों एवं जीवन के अन्य पक्षों को निश्चित तौर पर प्रभावित किया है। इस प्रकार मीडिया किसी भी साधन द्वारा सूचना सम्प्रेषित करने का माध्यम हैं। मीडिया के दो प्रकार होते है– प्रिन्ट मीडिया तथा इलेक्ट्रानिक मीडिया। प्रिन्ट मीडिया के अर्न्तगत अखबार, पत्रिकाएं, जर्नल्स, किताबे आदि आते है। इलेक्ट्रानिक मीडिया के अर्न्तगत टेलीविजन, रेडियों, फिल्म, वीडियों, ई–मेल, इन्टरनेट आदि आते है। जब मीडिया केवल किसी एक व्यक्ति को सन्देश पहुचाता है तब इसे व्यक्तिगत सम्प्रेण कहते है जैसे पत्र, टेलीफोन एवं टेलीग्राफ आदि परन्तु जब मीडिया के द्वारा एक बड़े जन मानस को सम्प्रेषण

किया जाता है तब इसे बहु सम्पेषण कहते है। जैसे अखबार, किताबे, रेडियों, टेलीविजन, इन्टरनेट आदि माध्यम से सम्पेषण करना।

तकनीकी की संकल्पना:

आज तकनीकी शब्द का प्रयोग व्यापक रूप में किया जाता है, यहॉ तक कि वर्तमान युग तकनीकी का युग कहा जाता है। आधुनिक समय में तकनीकी का विकास बड़ी तेजी से हो रहा है। मानव उसका उपयोग सभी क्षेत्रों में कर रहा है क्योंकि तकनीकी के प्रयोग से कार्यकुशलता में वृद्वि होती है। तकनीकी का तात्पर्य दैनिक जीवन में वैज्ञानिक ज्ञान का प्रयोग करने से है। तकनीकी शब्द को अधिकतर मशीन से जोड़कर देखा जाता है लेकिन यह आवश्यक नही है कि तकनीकी शिक्षा में मशीनों का प्रयोग ही किया जाय। इसका अर्थ तो सम्पूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया को योजनाबद्व कर कार्यान्वित करने में वैज्ञानिक सिद्वान्तों को प्रयोग में लाना है। तकनीकी शिक्षण, प्रशिक्षण तथा शिक्षा की लगभग सभी क्रियाओं में से सम्बन्धित है। जिसके द्वारा विभिन्न समस्याओं का समाधान अधिक प्रभावशाली पूर्वक करना एवं जिसके द्वारा कार्यकुशलता में वृद्वि होती है।

पर्यावरण शिक्षा में मीडिया एवं तकनीकी का उपयोग:

पर्यावरण शिक्षा के संदर्भ में मीडिया एवं तकनीकी एक दूसरे के पूरक है। मीडिया का प्रसार तकनीकी के द्वारा ही संभव है। यदि दोनो को सम्मिलित रूप से प्रयोग किया जाय तो पर्यावरण शिक्षा में व्यापक प्रभाव पड़ सकता है। इसलिए पर्यावरण शिक्षा में मीडिया एवं तकनीक का प्रयोग निम्न संदर्भ में देखा जा सकता है–

- पर्यावरण शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षित एवं साक्षर बनाने हेतु सामग्री कही भी, किसी को भी एवं कभी भी उपलब्ध होते है। जैसे– टेली कान्फ्रन्सिंग तकनीकी का प्रयोग।
- दूरदराज के क्षेत्रों तक पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूकता का विकास किया जा सकता है।
- विश्व भर में असीमित लोगों तक पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम फैलाया जा सकता है।
- किसी विशिष्ट कार्यक्षेत्र जैसे– फर्नीचर उद्योग, कागज उद्योग, आदि के लिए विशिष्ट कौशल विकसित किया जा सकता है।
- इसके द्वारा पर्यावरण शिक्षा के प्रति छात्रों में उच्च स्तरीय चिन्तन का विकास किया जा सकता है।
- इसके माध्यम से ही पर्यावरण विज्ञान की अन्तः विषयक तथा बहु विषयक उपागम की व्याख्या आसानी से की जा सकती है।
- सूचना पर्यावरण के प्रति अविष्कारात्मक चिन्तन का विकास किया जा सकता है।
- यह प्रभावशाली सम्प्रेषण को विकसित करती है। जिससे पर्यावरण के प्रति जागरूकता अभियान एवं कार्यक्रम चलाने में सहायता मिलती है।
- विभिन्न श्रव्य दृश्य सामग्रियों जैसे वीडियों, टेलीविजन, बहुमाध्यम कम्प्यूटर साफ्टवेयर जो विषय वस्तु, ध्वनी, संगीत, रंगीन चलचित्रों के माध्यम से पर्यावरणीय विज्ञान से सम्बन्धित विभिन्न प्रकरणों का ज्ञान दिया जाता है।
- छात्रों के विभिन्न कौशलों को विकसित करने में सहायता प्रदान की जा सकती हैं।
- विद्यार्थियों का व्यस्त रखने में उपयोगी है ताकि विद्यार्थी अपना ज्ञानवर्धन कर सके।
- इसके द्वारा छात्रों को उचित अभ्यास करने हेतु अवसर प्रदान किया जाता है।
- शैक्षिक दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रम पुनरावृत्ति और पुर्नबलन का प्रयोग करते हुए जनमानस को पर्यावरण जागरूकता, संरक्षण तथा पर्यावरणीय चेतना से सम्बन्धित ज्ञान प्रदान किया जा सकता है।
- इसके द्वारा छात्रों को पर्यावरण पर आनलाइन टयूटोरियल की भी व्यवस्था की जा सकती हैं।
- दूरभाष, फैक्स, ई–मेल आदि तकनीकों के द्वारा प्र्यावरण के विभिन्न विषयों पर चर्चा तथा अन्तःक्रिया विभिन्न विद्वानों के बीच कराई जा सकती है।
- अध्यापकों को स्वगति, स्वनिर्देशित तथा वेब आधारित कोर्स प्रदान किये जा सकते है।
- दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से मुद्रित सामग्री को दूर तक प्रसारित किया जा सकता है जिसके द्वारा सामान्य जन चेतना का विकास किया जा सके।
- तकनीकी तथा मीडिया छात्रों को पर्यावरण विज्ञान के प्रति सृजनात्मक अधिगम करने का अवसर देता है।

- यह पर्यावरण शिक्षा से सम्बन्धित विषयों का मूल्यांकन सरलता से करने में सहायक है।
- यह प्रभावशाली सम्प्रेषण को विकसित करती है। जिससे पर्यावरण के प्रति जागरूकता अभियान एवं कार्यक्रम चलाने में सहायता मिलती है।
- यह पर्यावरण शिक्षा से सम्बन्धित विषयों का मूल्यांकन सरलता से करने में सहायक है।
- यह शैक्षिक भ्रमण पर न ले जाने के अभाव में भी छात्रों को वास्तविक ज्ञान देने में सहायक है।

पर्यावरण शिक्षा शिक्षा के क्षेत्र में अत्यंत उपयोगी है। मीडिया एवं तकनीकी दोनो ही एक दूसरे के पूरक है। समय के अनुसार विभिन्न उपागमों का प्रयोग करके सम्प्रेषण को सक्रिय बनाया जा सकता है। जिसके द्वारा पर्यावरण शिक्षा को सशक्त बनाया जा सकता है। जिसका प्रयोग करके पर्यावरण को व्यवस्थित एवं प्रभावी बनाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सुची :

१ शर्मा आर ए, शिक्षा के तकनीकी आधार, आर लाल बुक डिपो मेरठ, 2011
२ डंगवाल किरन लता, पर्यावरणीय शिक्षा वर्तमान परिप्रेक्ष्य, वेदान्त पब्लिकेशन लखनऊ, 2012
३ बाजपेयी एल बी, शिक्षा में नवाचार एवं तकनीकी , आलोक प्रकाशन लखनऊ,
४ सिंह शालिनी, पर्यावरणीय शिक्षा, ठाकुर पब्लिशर्स लखनऊ, 2016
५ पाण्डे रेणु, अर्चना पाठक, पर्यावरण एवं व्यक्तित्व विकास, एच पी भार्गव बुक हाउस आगरा, 2012